आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024
Received: 20/06/2024; Accepted: 24/06/2024; Published: 26/06/2024

लेख

आते हैं ग़ैब से ये मज़ामीं ख़याल में

- **डॉ. आशुतोष कुमार**
हिंदी के सहायक आचार्य
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
सांध्यकालीन अध्ययन विभाग
शिमला – 171001
9627332040
tryambakdutt@gmail.com

डॉ. आशुतोष कुमार, **आते हैं ग़ैब से ये मज़ामीं ख़याल में**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 2/जून 2024,(163-165)

[शिमला स्थित कीकली चैरिटेबल ट्रस्ट अपनी रचनात्मक गतिविधियों के लिए सुख्यात है। इस संस्था ने वर्ष-2024 की कहानी लेखन प्रतियोगिता की घोषणा की। प्रतियोगिता में देश भर से तमाम विद्यार्थियों ने इसमें सहभागिता की। परिणामत: कुल इक्यावन प्रविष्टियों का चयन कर विगत 20 मई 2024 को इसके विजेताओं की घोषणा की गई। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल का सदस्य होने के नाते कथा लेखन की दुनिया के नवागतों के लिए, उनके लेखन को दृष्टिपथ में रखते हुए यह एक नितांत आत्मीय टिप्पणी। प्रविष्टियों के प्रति आलोचना की 'समन्तात् दृष्टि' इसके नेपथ्य में है।]

[1]

कीकली की कहानी प्रतियोगिता की कुछ प्रविष्टियों की मूल्यांकन प्रक्रिया से गुज़रते हुए मिर्ज़ा ग़ालिब बराबर याद आते रहे। किसी चिराग़-ए-दैर के नाते नहीं, जहाँ बनारस को दुनिया के दिल का नुक़्ता कहा गया है, बल्कि इस दफ़ा इस नाते कि *आते हैं ग़ैब[1] से ये मज़ामीं[2] ख़याल में/ 'ग़ालिब' सरीर-ए-ख़ामा[3] नवा-ए-सरोश[4] है*/ एक कृतिकार लेखन के उच्चासन पर विराजमान है। उसके दाएँ मसिपात्र रखा है। कागज़ पर क़लम अविरत

गति से दौड़ रही है। ग़ालिब अपने इस शे'र में कहते हैं कि ये कागज़ पर चलते क़लम की सरसराहट नहीं बल्कि देवदूतों द्वारा ईश्वरीय संदेशों को बयाँ करने की फुसफुसाहट है जिसे एक रचयिता बड़ी सतर्कता से सुनते हुए दर्ज़ कर रहा है। मेरे सामने जो फ़ाइल रखी है उसमें हिंदी-अंग्रेज़ी की 91 टंकित प्रविष्टियाँ हैं। यहाँ प्राथमिक शालाओं से लेकर स्नातकोत्तर तक अध्ययनरत प्रतिभागी मित्र शामिल हैं, वय मर्यादा 25 वर्ष है। मज़े की बात यह है कि इनके द्वारा टाँकी गई लाइनों के नेपथ्य में मुझे कीबोर्ड पर खटर-पटर करते हाथों की ज़गह मिर्ज़ा साहब द्वारा संकेतित *सरीर-ए-ख़ामा* पर ध्यान धरे अधिसंख्य नवप्रवेशी रचनाकार नज़र आ रहे हैं। ख़ुदा करे कि ऐसा ही हो!

[2]

इसी क्रम में मुझे यह अनुरोध प्राप्त हुआ है कि इन नवागत रचनाकारों के लिए उपादेय टिप्पणियाँ या सुझाव भी प्रेषित करूँ। इस नाते मैं सहभागियों से सीधे मुख़ातिब होते हुए इसकी शुरुआत सुप्रसिद्ध कथाधर्मी प्रो. काशीनाथ सिंह जी की एक समझाइश से करना चाहता हूँ। यह बात तब की है जब बनारस विश्वविद्यालय के प्रबंध-संकाय में अध्ययनरत श्री चंदन पांडेय की एक कहानी *परिंदगी है कि नाक़ामयाब है* किसी पत्रिका (शायद हंस या कथादेश) में पहली बार प्रकाशित हुई थी। इसके प्रकाशन वाले माह में काशी के अस्सी घाट के समीपस्थ इसके पाठ और चर्चा का बेहद अनौपचारिक आयोजन हुआ जिसमें हम दसेक विद्यार्थी-मित्रों के बीच गुरुवर काशीनाथ जी की उपस्थिति से चार-चाँद लग गए थे। काशीनाथ सिंह जी ने कहा था, "पहली बात तो यह है कि कहानी सोची तो बिलकुल नहीं जाती, लिखी भी नहीं जाती, वह कही जाती है।...मैं यहाँ आज थरिया बजाने[5] आया हूँ कि बनारस में एक कथाकार का जन्म हुआ है।" इसके आधार पर मेरा यह पहला सुझाव है कि कहानी लेखन के समय इस बात को ढंग से महसूस करते हुए आगे बढ़ें कि आप अपने संभाव्य पाठक को कहानी सुना रहे हैं। वह पढ़ नहीं रहा है, वह आपके लिखे को सुन रहा है। और, आप लिख नहीं रहे हैं, श्रोता को सुना रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि इस व्यावहारिक सुझाव पर अमल करने पर बात बननी शुरू हो जाएगी। बात से बात बनती, या फिर बिगड़ती चली जाए तो कहानी का सिलसिला चल निकलता है। दूसरी बात यह है कि ढंग से लिखते रहने के लिए ढंग से पढ़ना, नियमित पढ़ना और ख़ूब पढ़ना बहुत ज़रूरी है। इस दूसरी बात का कोई विकल्प नहीं है, इसके लिए कथा सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानियों से आरंभ किया जा सकता है। प्रेमचंद जी की प्राय: सभी कहानियाँ *मानसरोवर* नामक कहानी संग्रह के विभिन्न भागों में संकलित की गई हैं। श्री राजेंद्र यादव द्वारा संपादित *एक दुनिया समानांतर* में चयनित कहानियाँ तथा उन कथाकारों की अन्यान्य कहानियाँ भी पढ़ी जानी चाहिए। इस संचयन की भूमिका भी मार्के की है। इसके बाद की राह आपकी मति और गति के मुताबिक़ ख़ुद-ब-ख़ुद परिलक्षित होने लगेगी, ऐसा विज्ञ जनों का अनुभव है।

अब एक तीसरी बात और। तमाम कच्ची-पक्की कहानियों को ढंग से पढ़ चुकने के बाद जब आपको लगे कि आपका आस्वाद (taste) विकसित होने लगा है तब डॉ. नामवर सिंह जी की आलोचना पुस्तक *कहानी : नई*

कहानी का पढ़ा जाना, मेरे हिसाब से ज़रूरी है। यह क़िताब आपके बोध (Understanding), आस्वाद (Enjoyment), परिशंसन (Appreciation), रुचि परिष्करण (Correction of taste) – कहानियों के मामले में, इन चारों दृष्टियों से उपकारक हो सकती है।

[3]

हिंदी के कृती चिंतक श्री सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय के नाम से आप परिचित ही होंगे। अज्ञेय जी ने अपने बहुश्रुत उपन्यास *शेखर : एक जीवनी* के पहले भाग में प्रसंगवश लिखा है "साहित्य का निर्माण, मानो जीवित मृत्यु का आह्वान है। साहित्यकार को निर्माण करके और लाभ भी तो क्या, रचयिता होने का सुख भी नहीं मिलता, क्योंकि काम पूरा होते ही वह देखता है कि वह देखता है, अरे, यह तो वह नहीं है जो मैं बनाना चाहता था, वह मानो क्रियाशीलता का नारद है, उसे कहीं रुकना नहीं है – उसे सर्वत्र भड़काना है, उभारना है, जलाना है और कभी शांत नहीं होना है – कहीं रुकना नहीं है। शायद इसीलिए उसके पथ के आरंभ में ही विधि उसे रोककर कहती है, 'देख, इस पथ पर मत जा, यह तेरे पैरों के लिए नहीं है।' और यदि वह ढीठ होकर बढ़ता ही जाता है, तो वह कहती है, 'अच्छा तो तू समझ – अपना जिम्मा संभाल!' और निर्मम अपने खाते में से, अपने पोष्य और रक्षणीय बच्चों की सूची में से उसका नाम काट देती है।"[6] आगे बढ़ने, डूबने और डूबकर उत्तीर्ण होने की प्रक्रिया में आप उपर्युक्त उद्धरण को शतावधान होकर आत्मसात करें। आपकी यात्रा मंगलमय हो। शुभास्ते पन्थानः सन्तु।

संदर्भ:

1. अदृश्य लोक

2. कृति

3. लिखते वक़्त काग़ज़ पर क़लम घसीटने से पैदा होती सरसराहट की ध्वनि।

4. देवदूतों की आवाज़

5. थाली बजाना। घर में नए बच्चे का जन्म होते ही थाली बजाई जाती है। तदनंतर छठी, बरही और मसवारा (जन्म से क्रमश: छ:, बारह और तीस दिन) में/तक ढोलक की थाप पर ख़ूब सोहर गए जाते हैं। बताशे और लड्डू खिलाकर मुँह मीठा कराया जाता है। बनारस की यह रीत है।

6. अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन, शेखर : एक जीवनी (भाग-1), उषा और ईश्वर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1941. इसका मूल पाठ गद्यकोश पर भी ऑनलाइन उपलब्ध है।

****